8-1-03

अष्ट और इष्ट बनने के लिए अष्ट शक्तियाँ धारण करो

आज विशेष दादी जानकी की यादप्यार लेते बाबा के पास पहुंची और दादी के दिल का संकल्प बाबा को सुनाया। बाबा बहुत जिगरी दिल से मुस्कराया और बोले, बच्ची को बाप के हर एक अमूल्य बोल से बहुत प्यार और रिगार्ड है इसलिए बच्ची औरों को भी हर बोल, वचन का महत्त्व और प्यार सिखाती है। बापदादा ने जो बेहद की सेवा अर्थ निमित्त बनाया है, तो रहमदिल से हर कोने की आत्माओं को कुछ प्रभु प्रसाद मिल जाए, कोई वंचित न रह जाए, यह दृढ़ संकल्प स्वत: ही सफलता दिलाता रहता है।

बच्ची को विशेष अष्ट शक्तियों को समय पर कार्य में लगाने की विधि अच्छी आती है, इसलिए अष्ट शक्ति द्वारा अष्ट और इष्ट बनने के अधिकारी है। बापदादा के दिल तख्त के अधिकारी सो भविष्य राज्य अधिकारी आत्मा है क्योंकि अब याद का आसन दोनों सिंहासन के अधिकारी स्वत: बनाते हैं। पुरुषार्थ भी सहज स्वत: तीव्र चल रहा है इसलिए सहज सफलता प्राप्त है। मुख और मन की दोनों सेवा का फल भी प्राप्त हो रहा है। उमंग-उत्साह के पंख से स्वयं के साथ औरों को भी उड़ाने का संकल्प अच्छा है। एकमत, एकरस, एकाग्रता की तरफ अभ्यास अच्छा है। श्रीमत की हिम्मत और रिगार्ड में स्वयं रह औरों को भी श्रीमत पर चलने की विधि सच्ची दिल, साफ दिल का महामन्त्र अच्छा अनुभव कराती है। इसलिए बापदादा कहते मस्तकमणी है, दिल के हार का सच्चा डायमण्ड है।

ऐसे भिन्न-भिन्न मधुर बोल उच्चारण करते हुए अपने स्नेह की गोदी में समा दिया और बहुत-बहुत प्यार किया, दुलार दिया। हम तो साक्षी हो देख देख खुश हो रही थी।